KURUKSHETRA DEVELOPMENT BOARD
कुरुक्षेत्र विकास मंडल

महाभारत
व्यूह रचना दीर्घा

Mahabharata
Battle Formation Gallery

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड
कुरुक्षेत्र, हरियाणा

महाभारत युद्ध की व्यूह रचनाएं- एक परिचय

पावन ब्रह्म सरोवर के तट पर इस दीर्घा का निर्माण केन्द्र सरकार की कृष्ण सर्किट योजना के अर्न्तगत हरियाणा पर्यटन निगम द्वारा 49 लाख रुपये की लागत से करवाया गया है जिसका उद्देश्य महाभारत कालीन सैन्य विज्ञान से जनमानस को परिचित करवाना है।

महाभारत के अनुसार द्वापर युग और कलियुग के सन्धिकाल में कुरुक्षेत्र भूमि में कुरुवंशीय कौरवों एवं पाण्डवों के मध्य 18 दिन तक महाभारत का युद्ध लड़ा गया था। इस युद्ध मे कौरवों के पास ग्यारह अक्षौहिणी सेना व पाण्डवों के पास सात अक्षौहिणी सेना थी। हर अक्षौहिणी सेना की कमान महारथियों के पास होती थी। किसी विशेष दिन युद्ध के लिये सेना को किस व्यूह में खड़ा किया जाये यह जिम्मेवारी प्रायः महारथियों या सेना के सर्वोच्च सेना नायक या सेनापति की होती थी। महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर से दस दिन की व्यूह रचनांए भीष्म पितामह ने ही बनाई थी। उनके पश्चात द्रोण, कर्ण और शल्य ने शेष दिनों के लिये व्यूहों का निर्माण किया। इसी प्रकार पाण्डवों के लिये मुख्यतः उनके महासेनानायक धृष्टधुम्न, अर्जुन व युधिष्ठिर ने व्यूह रचनाएं रची थी। व्यूहों के निर्माण मे अपने प्रतिपक्षी के व्यूह की स्थिति को भी ध्यान में रखा जाता था। मानव शरीर के समान ही व्यूह का भी सिर, ग्रीवा, दायें व बायें पक्ष या हाथ, शरीर का मध्य भाग या अन्तिम भाग होता था। व्यूह में सेना के अवयवों अर्थात रथसेना, गजसेना, अश्वसेना व पदाति अर्थात पैदल सेना का संयोजन इस प्रकार किया जाता था कि प्रतिपक्षी के हर दांव पेंच को असफल किया जा सके। व्यूह के एक भाग में लडने वाले योद्धाओं को परिस्थिति के अनुसार दूसरे भाग में स्थानांतरित किया जा सकता था।

महाभारत में सेना को पत्ति, सेनामुख, गुल्म, गण, वाहिनी, पृतना, चमू, अनीकिनी एवं अक्षौहिणी आदि कई ईकाईयों में बांटा गया है। आज भी सेना को उनके संख्या बल के अनुसार कम्पनी सेक्सन, प्लाटून, कार्पस, बटालियन और रजेमैंट में बांटा जाता है।

अक्षौहिणी सेना का विवरण

इकाई	रथ	हस्ति	अश्व	पदाति
पत्ति	1	1	3	5
सेनामुख	3	3	9	15
गुल्म	9	9	27	45
गण	27	27	81	135
वाहिनी	81	81	243	405
पृतना	243	243	729	1,215
चमू	729	729	2,187	3,645
अनीकिनी	2,187	2,187	6,561	10,935
अक्षौहिणी	21,870	21,870	65,610	1,09,350

इस प्रकार एक अक्षौहिणी सेना में 21, 870 रथ उतने ही हाथी, 65,610 अश्व तथा 1,09,350 पैदल सैनिक होते थे।

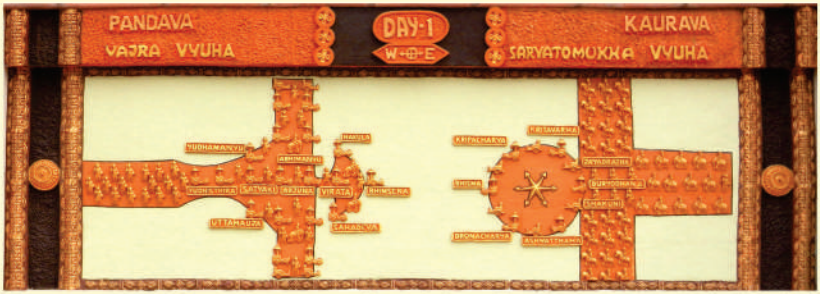

पहला दिन

महाभारत युद्ध के पहले दिन भीष्म पितामह और अर्जुन ने कौरव और पाण्डव सेनाओं के लिये अलग-अलग व्यूह रचनाएं बनायी। पाण्डवों ने अपनी सेना को वज्र व्यूह तथा कौरवों ने सर्वतोमुख व्यूह में खड़ा किया। प्रथम दिन के इस युद्ध में मद्रनरेश शल्य ने विराट राजकुमार उत्तर को मार डाला जिसके पश्चात श्वेत एवं भीष्म पितामह के मध्य भयंकर युद्ध हुआ जिसमें भीष्म के हाथों श्वेत मारे गए। इस प्रकार पहले दिन के युद्ध में कौरव पक्ष का पलड़ा भारी रहा।

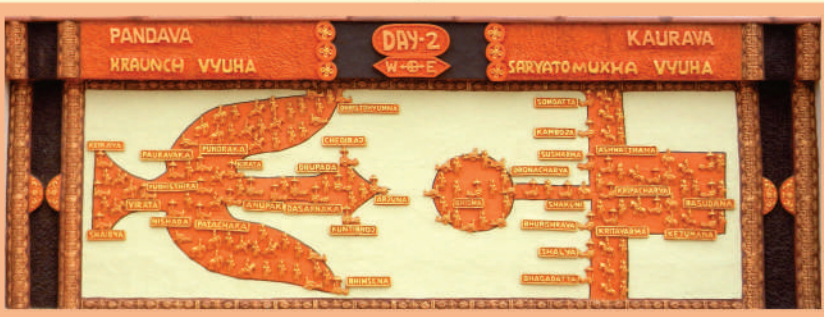

दूसरा दिन

इस दिन धृष्टद्युम्न ने पाण्डव सेना के लिए क्रौंच व्यूह की रचना की जिसके शिरोभाग में अर्जुन थे। कौरवों ने इस दिन भी सर्वतोमुख व्यूह की रचना की। इस दिन के युद्ध में भीम ने कौरव पक्षीय कलिंग सेना को परास्त किया। इस दिन भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य के साथ अर्जुन का भयंकर युद्ध हुआ। इस दिन के युद्ध में अन्त में पाण्डव सेना कौरवों पर भारी रही।

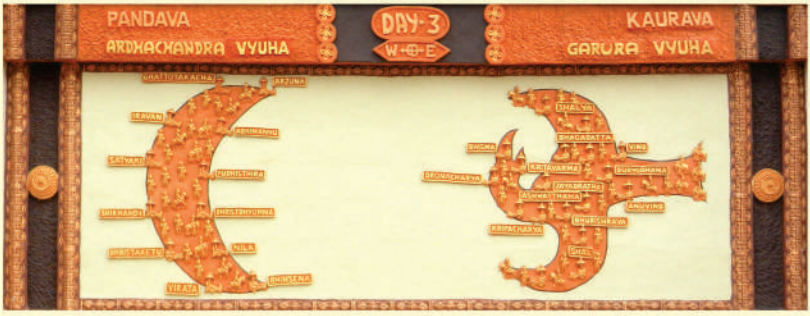

तीसरा दिन

इस दिन भीष्म पितामह ने कौरव सेना के लिए गरुड़ व्यूह तथा अर्जुन ने अपनी सेना के लिए अर्द्धचन्द्राकार व्यूह बनाया। इस दिन के युद्ध में पहले तो कौरव सेना पाण्डवों पर भारी रही लेकिन दिन के अन्त में अर्जुन के घोर पराक्रम से अन्ततः पाण्डव सेना का पलड़ा भारी रहा। इस दिन अर्जुन ने भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, भूरिश्रवा एवं जयद्रथ जैसे कौरव योद्धाओं को बुरी तरह परास्त किया।

चौथा दिन

इस दिन भीष्म पितामह ने कौरव सेना को मकर व्यूह तथा पाण्डवों ने अपनी सेना को अर्धचन्द्र व्यूह में खड़ा किया। इस दिन के युद्ध में अभिमन्यु ने अश्वत्थामा, भूरिश्रवा, शल्य एवं चित्रसेन को परास्त किया। इसी दिन भगदत्त और भीम तथा भीम पुत्र घटोत्कच एवं भगदत्त के बीच भंयकर युद्ध हुआ। घटोत्कच के पराक्रम से कौरव सेना इस दिन के यद्ध में बुरी तरह पराजित होकर अपने शिविर में लौटने को विवश हुई।

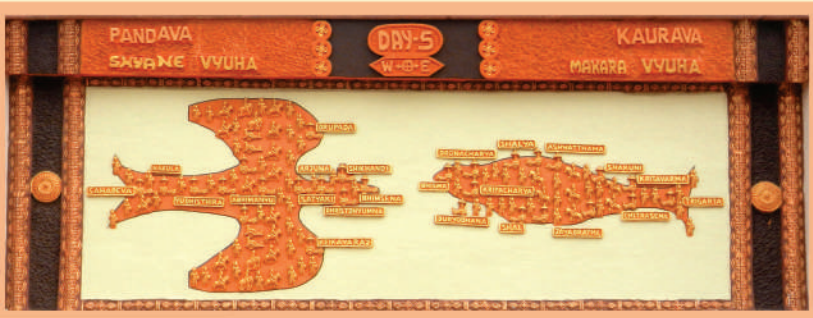

पाँचवां दिन

इस दिन भी भीष्म पितामह ने कौरव सेना को मकर व्यूह में तथा पाण्डवों ने अपनी सेना को श्येन व्यूह में खड़ा किया। इस दिन के युद्ध में पहले भीम और भीष्म तथा बाद मे अर्जुन एवं भीष्म पितामह में भयंकर युद्ध हुआ। कौरव सेना को भारी क्षति होते देख भीष्म पितामह ने इस दिन पाण्डव सेना पर दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया। भूरिश्रवा ने इस दिन के युद्ध में महारथी सात्यकि के दस पुत्रों को मार डाला। सायंकाल होने तक अर्जुन ने कौरवों को बुरी तरह पराजित किया।

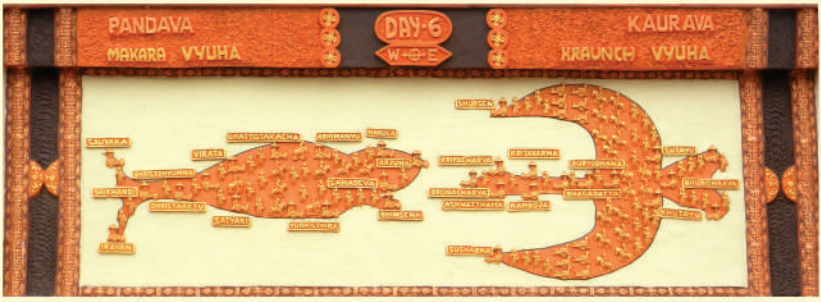

छठवां दिन

युद्ध के छठे दिन युधिष्ठिर ने पाण्डव सेना को मकर व्यूह तथा भीष्म ने कौरव सेना को क्रौंच व्यूह मे खड़ा किया। इस दिन के युद्ध में भीम ने कौरव सेना के कई वीरों को मार कर दुर्योधन को भी घायल किया। श्रुतकर्मा ने इसी दिन दुर्योधन के भाई दुर्मुख को मार डाला। इस दिन का युद्ध सूर्यास्त के पश्चात् भी चलता रहा। इस दिन के युद्ध में भीष्म पितामह ने पाण्डव सेना को बहुत क्षति पहुँचाई।

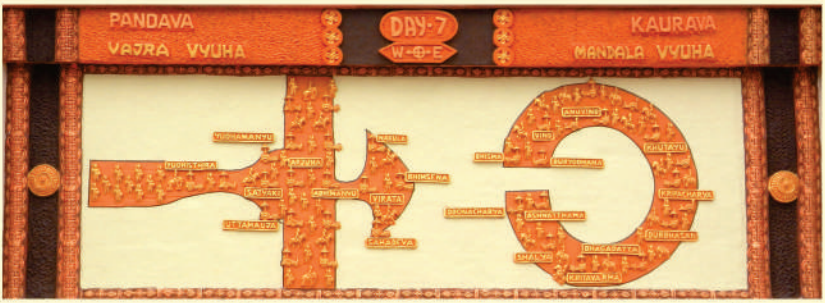

सातवां दिन

इस दिन कौरव सेना मण्डल व्यूह में तथा पाण्डव सेना वज्र व्यूह में आमने-सामने हुई। इस दिन के युद्ध में भीम ने कौरव सेना को भारी क्षति पहुंचाई। अर्जुन पुत्र इरावान ने इस दिन अवन्ती राजकुमारों विंद एवं अनुविंद को रणभूमि छोड़ने के लिए विवश किया। इसी दिन पुनः राजा भगदत्त एवं घटोत्कच के बीच में भयंकर युद्ध हुआ तथा अर्जुन ने त्रिगर्तो की सेना को भारी क्षति पहुँचाई। दूसरी ओर भीष्म पितामह ने भी इस दिन अपने अतुलनीय पराक्रम से पाण्डव सेना के कई वीरों को धराशायी किया।

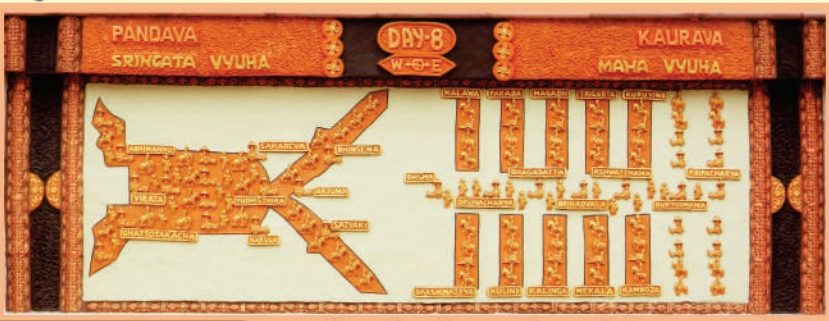

आठवां दिन

इस दिन भीष्म पितामह ने अपनी सेना महाव्यूह मे तथा पाण्डवों ने अपनी सेना श्रृंगट व्यूह मे खड़ी की। इस दिन भीष्म पितामह और भीम तथा अलम्बुष एवं अर्जुन पुत्र इरावान के बीच भयंकर युद्ध हुआ जिसमें अन्ततः इरावान वीरगति को प्राप्त हुए। उसके पश्चात घटोत्कच ने कौरव सेना का महाविनाश करना शुरु किया। इस दिन भीम ने भगदत्त के कई साथी योद्धाओं को मार डाला। भीम के पश्चात् घटोत्कच एवं भगदत्त के बीच भयानक युद्ध हुआ। भीम ने इस दिन दुर्योधन के सात भाइयों को मार डाला।

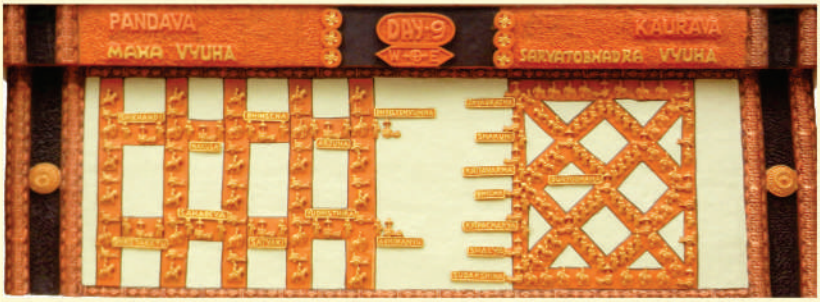

नौवां दिन

इस दिन कौरव सेना सर्वतोभद्र व्यूह में तथा पाण्डवं सेना महाव्यूह मे आमने सामने खडी थी। इस दिन अभिमन्यु एंव अलम्बुश के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इस दिन युद्ध में अर्जुन को शिथिल होता देख तथा भीष्म के महा पराक्रम को रोकने के लिये भगवान श्रीकृष्ण भीष्म पितामह को मारने दौड़ पड़े। यह देख कर अर्जुन ने श्रीकृष्ण से क्षमा मांग कर उन्हे भविष्य में कभी युद्ध मे शिथिल न पड़ने का वचन दिया अर्जुन के ऐसे आश्वासन के बाद श्रीकृष्ण शांत हुए। इस दिन के युद्ध में पाण्डव सेना को भीष्म के हाथों भारी विनाश सहना पड़ा।

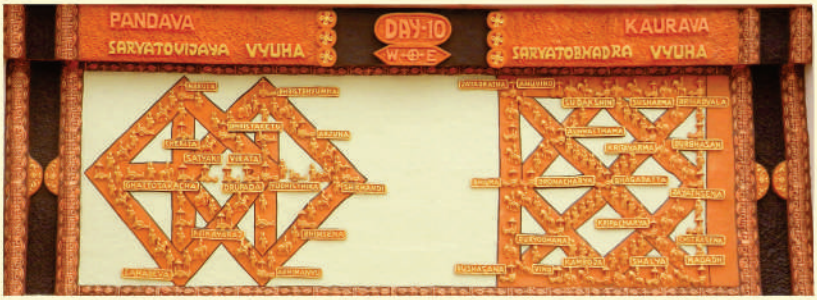

दसवां दिन

इस दिन पाण्डवों ने अपनी सेना को सर्वत्र विजय नामक व्यूह तथी भीष्म पितामह ने अपनी सेना को सर्वतोभद्र व्यूह में खड़ा किया। इस दिन के युद्ध में पाण्डवों ने शिखण्डी को आगे रखकर भीष्म पर आक्रमण किया। चिन्तित दुर्योधन ने भीष्म को अपनी सेना का संहार रोकने का आग्रह किया। अर्जुन ने शिखण्डी को भीष्म पितामह के सामने रखकर भीष्म के अनेक धनुषों को काट डाला। अन्त में सूर्यास्त के समय अर्जुन के बाणों से छलनी हुए भीष्म पितामह अपने रथ से गिर पड़े।

ग्यारहवां दिन

भीष्म पितामह के पराभव के पश्चात् युद्ध के ग्यारहवें दिन गुरु द्रोणाचार्य कौरव सेना के सेनापति बनाए गये जिन्होनें कौरव सेना को शकट व्यूह मे खड़ा किया। इस व्यूह का सामना पाण्डवो ने क्रौंच व्यूह से किया। इस दिन के युद्ध में द्रोणाचार्य ने पांचाल सेना को काफी क्षति पहुँचाई। पाण्डव महारथियों ने जहाँ द्रोणाचार्य को घेरा तो द्रोणाचार्य ने शिखण्डी, उत्तमौजा, नकुल, सहदेव, युधिष्ठिर, सात्यकि एवं विराट सहित अनेक पाण्डव पक्षीय योद्धाओं को घायल कर दिया। अन्त में अर्जुन के प्रत्याक्रमण के फलस्वरूप कौरव सेना युद्ध बन्द करने को बाध्य हुई।

बारहवां दिन

इस दिन द्रोणाचार्य ने कौरव सेना को गरुड़ व्यूह में तथा युधिष्ठिर ने पाण्डवं सेना को मण्डलार्द्ध व्यूह मे खडा किया। इस दिन के युद्ध में राजा भगदत्त ने अर्जुन को मारने के लिए वैष्णवास्त्र का प्रयोग किया परन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने उसे अपने वक्षस्थल पर झेलकर निष्प्रभावी बनाया। अन्त में अर्जुन ने एक अर्द्धचन्द्राकार बाण से राजा भगदत्त को मार डाला। इस दिन के युद्ध में अर्जुन और द्रोणाचार्य ने एक दूसरे पक्ष की सेनाओं को अत्यन्त क्षति पहुँचाई।

तेरहवां दिन

इस दिन द्रोणाचार्य ने कौरव सेना को चक्रव्यूह में तथा अर्जुन की अनुपस्थिति में युधिष्ठिर ने अपनी सेना को मण्डलार्द्ध व्यूह मे खड़ा किया। आचार्य द्रोण को परास्त कर अभिमन्यु ने व्यूह में प्रवेश किया और कौरव सेना के अनेक योद्धाओं को मार डाला। इस दिन के युद्ध में सिन्धुराज जयद्रथ ने अपने घोर पराक्रम से पाण्डवों की सेना को व्यूह में प्रवेश करने से रोका। अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में कौशल नरेश बृहद्बल तथा दुर्योधन के पुत्र लक्ष्मण को मार डाला। इसके बाद सात कौरव महारथियों ने अभिमन्यु को घेर कर उसे निःशस्त्र किया। अभिमन्यु ने रथ का चक्र लेकर कौरवों का सामना किया। अन्त में दुशासन के पुत्र के गदा प्रहार से अभिमन्यु वीरगति को प्राप्त हुये।

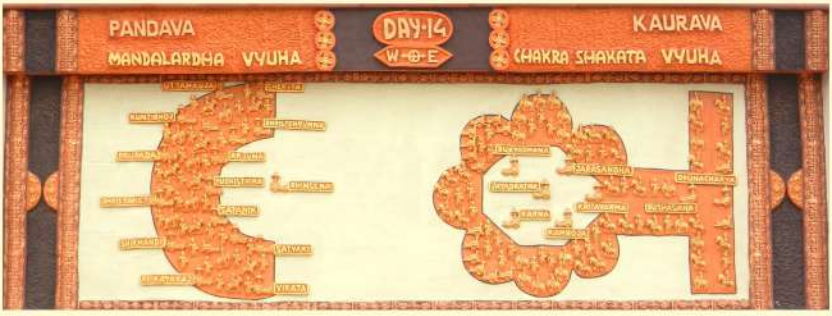

चौदहवां दिन

द्रोणाचार्य ने इस दिन कौरव सेना को शकट व्यूह में तथा पाण्डवों ने अपनी सेना को मण्डलार्द्ध व्यूह में खडा किया। इस दिन जयद्रथ के निकट पहुँचने के लिए अर्जुन ने द्रोण को परास्त कर काम्बोज राजकुमार सुदक्षिण, श्रुतायु, अच्चुतायु, नियतायु, दीघार्यु तथा राजा अम्बष्ठ, विन्द और अनुविन्द को मार डाला। भीम ने इस दिन दुर्योधन के आठ भाइयों को मार डाला। सात्यकि ने इस दिन अलम्बुष तथा भूरिश्रवा को मार डाला। सूर्यास्त से ठीक पहले भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी योग माया से अंधकार उत्पन्न किया जिसे देखने के लिये गुप्त व्यूह से बाहर आये हुये जयद्रथ को उसी समय अर्जुन ने मार डाला। इस दिन रात्रि को हुए युद्ध में कर्ण ने घोर पराक्रमी घटोत्कच को मार डाला।

पंद्रहवां दिन

इस दिन अर्जुन ने अपनी सेना को अर्द्धचन्द्राकार व्यूह तथा द्रोणाचार्य ने कौरव सेना को शकट व्यूह में खड़ा किया। इस दिन के आरम्भ में ही द्रोणाचार्य ने विराट एवं द्रुपद को मार डाला। इसी दिन भीम ने अश्वत्थामा नामक हाथी को मारकर द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु का समाचार कौरव सेना में फैला दिया। पुत्रशोक में जैसे ही द्रोणाचार्य युद्धभूमि में शस्त्र त्याग कर बैठे उसी समय धृष्टद्युम्न ने तलवार से उनका सिर काट डाला। अपने पिता की मृत्यु का बदला अश्वत्थामा ने पाण्डव सेना पर दिव्य नारायणास्त्र का प्रयोग करके लिया। लेकिन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा सुझाये गए उपाय से नारायणास्त्र शान्त हुआ तथा पाण्डव सेना महाविनाश से बच गई।

सोलहवां दिन

द्रोणाचार्य के पश्चात इस दिन कर्ण कौरव सेना के सेनापति बनाये गये जिन्होनें इस दिन कौरव सेना के लिये मकर व्यूह की रचना की। इस पर अर्जुन ने अपनी सेना को अर्द्धचन्द्र व्यूह मे खड़ा किया। इस दिन के युद्ध में सात्यकि ने केकय राजकुमार अनुविन्द को और अर्जुन ने सत्यसेन और चित्रसेन को मार डाला। इस दिन के युद्ध में कर्ण ने घायल नकुल को जीवनदान देकर कुन्ती को दिए गये वचनों की पालना की। अर्जुन ने दुर्योधन के धनुष, ध्वजा, सारथी सहित रथ को नष्ट किया।

सत्रहवां दिन

इस दिन कौरव सेना फिर से मकर व्यूह मे तथा पाण्डव सेना अनुपम व्यूह में आमने सामने रही। अर्जुन ने इस दिन संशप्तकों की सेनाओं का विनाश कर डाला। इस दिन कर्ण का युधिष्ठिर, भीम और धृष्टद्युम्न से युद्ध हुआ। कर्ण ने इस दिन पाण्डव पक्ष के कई प्रमुख वीरों को मार डाला तथा भीम ने इस दिन दुःशासन को मार डाला। इसी दिन के अन्तिम प्रहर में कर्ण और अर्जुन के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में कर्ण के रथ का पहिया जमीन में धँस गया। श्रीकृष्ण की सलाह पर अर्जुन ने उसी समय रथ का पहिया उठाते हुए कर्ण को मार डाला।

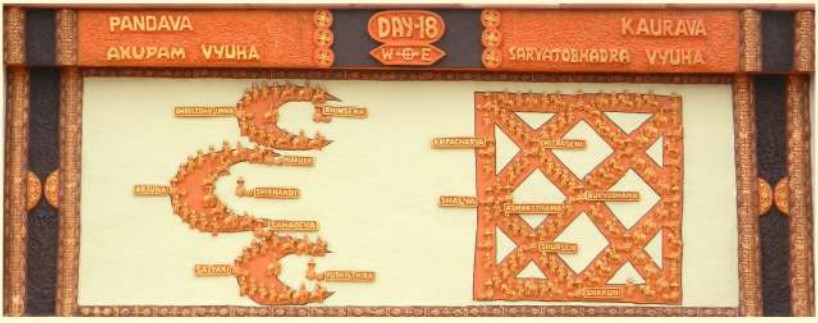

अठारहवां दिन

इस अन्तिम दिन मद्रराज शल्य कौरव सेनापति बने जिन्होनें अपनी सेना के लिए सर्वतोभद्र व्यूह बनाया जिसका सामना पाण्डवों ने अनुपम व्यूह से किया। इस दिन युधिष्ठिर ने मद्रराज शल्य को, सहदेव ने शकुनि एवं उसके पुत्र उलूक को तथा भीम ने धृतराष्ट्र के बारह पुत्रों तथा मार डाला। अपनी सेना की पराजय को देख दुर्योधन रणभूमि से पलायन कर गया। पाण्डवों ने दुर्योधन का पीछा कर व्यास सरोवर के जल में विश्राम करते हुए दुर्योधन को युद्ध के लिए ललकारा। तत्पश्चात भीम एवं दुर्योधन के बीच भयानक गदा युद्ध हुआ। युद्ध में अन्ततः भीम ने दुर्योधन की जंघा पर गदा का प्रहार कर उसे धराशायी कर दिया। इस दिन के अंत में कौरव सेना के केवल तीन महारथी कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा ही बच गए थे।

कौरवों के सहयोगी देश एवं जनपद

गांधार, मद्र, सिन्ध, काम्बोज, कलिंग, सिंहल, दरद, अभीषह, मगध, पिशाच, कोसल, प्रतीच्य, बाह्लिक, उदीच्य, अंश, पल्लव, सौराष्ट्र, अवन्ति, निषाद, शूरसेन, शिबि, वसति, पौरव, तुषार, चूचुप्रदेश, अश्वक, पाण्डय, पुलिन्द, पारद, क्षुद्रक, प्राग्ज्योतिषपुर, मेकल, कुरुविन्द, त्रिपुरा, शल, अम्बष्ठ, कैतव, यवन, त्रिगर्त, सौवीर एवं प्राच्य।

पाण्डवों के सहयोगी देश एवं जनपद

पांचाल, चेदि, काशी, करुष, मत्स्य, केकय, सृंजय, दक्षार्ण, सोमक, कुन्ति, आनप्त, दाशेरक, प्रभद्रक, अनूपक, किरात, पटच्चर, तित्तिर, चोल, अग्निवेश्य, हुण्ड, दानभारि, शबर, उद्भस, वत्स, पौण्ड्र, पिशाच, पुण्ड्र, कुण्डीविष, मारुत, धेनुक, तगंण एवं परतगंण।

ब्रह्म सरोवर तट पर स्थित महाभारत व्यूह रचना दीर्घा का एक विहंगम दृश्य

सम्पर्क

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड
ब्रह्म सरोवर, कुरुक्षेत्र, हरियाणा - 136118

दूरभाष : +91 1744 270187, 259505, 251288
ई-मेल : kdbkkr@gmail.com

www.48koskurukshetra.com

/kdbkurukshetra